मगध क्षेत्र (बिहार) की ''टिकुली कला'' के बदलते स्वरुप का सौंदर्यात्मक विवेचन एवं कला का बाज़ारीकरण

दयालबाग़ एज्यूकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थिनी

गीतांजली गालव

निर्देशिका

डा0 मीनाक्षी ठाकुर

विभागाध्यक्ष, ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग, कला संकाय

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी),

दयालबाग, आगरा – 282005

2022

विषय-प्रवेश

शोध संकल्पना	**1-5**
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन	**5-6**
परिकल्पना	**6-7**
उद्देश्य	**7-8**
चर	**8**
कार्य प्रणाली **1. अनुसंधान अभिकल्प** **2.प्रदत्त संकलन** • **प्राथमिक स्त्रोत** • **द्‌वितीयक स्त्रोत**	**8-9**
प्रतिदर्श आकार	**9**
प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि	**9**
सीमायें	**9**
निष्कर्ष	**10**

शोध संकल्पना -

''मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन को आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है।'' भारतीय कला को भारतीय सभ्यता का स्वरुप माना जाता है। हमेशा से ही भारत की कलाएं और हस्तशिल्प इसकी सांस्कृतिक और परम्परागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का माध्यम रहे हैं। भारत के हर प्रदेश में कला की अपनी एक विशेष शैली और पद्धति है जिसे 'लोक कला' के नाम से जाना जाता है। इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि 'भारतीय ग्रामीण सभ्यता' का। लोक कला के अलावा परम्परागत कला का एक अन्य रूप भी है जो अलग-अलग जनजातियां और देहात के लोगो में प्रचलित है। इसे 'जनजातीय कला' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारत की लोक और जनजातीय कलाएं बहुत ही पारम्परिक और साधारण होने पर भी इतनी सजीव और प्रभावशाली हैं कि उनसे देश की समृद्ध विरासत का अनुमान स्वतः ही हो जाता है। आदिकाल से ही मानव जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यकताओ की पूर्ति की ओर प्रयत्नशील रहा है वहीं दूसरी ओर प्रकृति में व्याप्त सौंदर्य से अभिभूत होकर उसे और अधिक सुदर बनाने के लिए भी प्रयास करता रहा है। भारत की लोक और जनजातीय कला भी इससे विमुख नहीं रहीं। भारत की लोक और जनजातीय कलाओं में प्रकृति का अंकन प्रमुखता से मिलता है एवं प्रकृति की सबसे अनुपम कृति नारी है जिसे प्रकृति का पर्याय भी माना जाता है। सभी कलाएं नारी के अंकन के बिना अपूर्ण ही मानी जाती रही है। अतः प्राचीन कलाओं में विशेष रुप से दैवीय रूप में, नारी का अकंन प्राप्त होता है।

मनुष्य अपने आस-पास के परिवेश में सौंदर्यवृद्धि हेतु कला का उपयोग सदा से ही सजावट हेतु करता आया है जिनमें रंगोली, माण्डना, सांझी, भित्ती चित्रण इत्यादि लोक कलाओं का प्रचलन वर्तमान में भी दृष्टव्य है। उसी प्रकार महिलाएं जो कि स्वयं ही सौंदर्य का पर्याय मानी जाती रही है, अपने सौंदर्य में वृद्धि हेतु अपने चेहरे की सजावट के लिए टिकुली का प्रयोग करती आ रही हैं।

''टिकुली'' - जिसे भारत के हिंदी क्षेत्र में बिंदी कहा जाता है ''एक छोटा-सा गोलाकार हीरा अथवा बूंदों वाला गोल आभूषण होता है जिसे महिलाएं अपनी भौंहों के बीच में लगाती हैं।'' टिकुली शब्द का प्रयोग स्थानीय

रूप से ''बिंदी'' का वर्णन करने के लिए किया जाता है। भारतीय संस्कृति में एक लंबे समय से, विवाहित महिलाएं सुंदरता के प्रतीक के रूप में अपने माथे पर बिंदी अथवा टिकुली के रूप में चंदन व सिंदूर का उपयोग करती आ रही हैं। टिकुली का इतिहास मौर्यकालीन (2500 वर्षों) माना जाता है। मौर्य और गुप्त काल के दौरान पाटलिपुत्र की शाही महिला-निवासी अपने चेहरे को सजाने के लिए टिकुली पहनती थीं जिसका वर्णन हमें चीनी यात्री ''फ़ाहयान'' की पुस्तक में मिलता है। यह प्रथा बिहार में आज भी प्रचलित है। टिकुली से ही प्रेरित होकर बिहार के पटना शहर में करीब 800 वर्षों पूर्व एक लोक शिल्पकला का उद्‌गम हुआ जिसे ''टिकुली कला'' के नाम से पहचान मिली। बिहार की कला और शिल्प विविध हैं, जो इतिहास और धर्म में समृद्‌ध हैं। टिकुली कला मूल रुप से बिहार की लोक शिल्पकला है जिसे सैकडों वर्षों से पटना शहर में कुटीर उद्‌योग के रुप में किया जाता रहा है। माना जाता है कि करीब 500 परिवार के 5000 व्यक्ति इस कला से जुडे थे जो अपने परिवारों के साथ टिकुली कला के उत्पादन में लगे हुए थे।

टिकुली निर्माण प्रक्रिया-

टिकुली का निर्माण हिन्दू व मुस्लिम वर्गो द्‌वारा साथ मिलकर किया जाता था। टिकुली का निर्माण मुख्य रूप से कांच के छोटे-छोटे टुकड़े को काटकर उस पर सोने की परत चिपकाकर एवं उस पर डिजाइन बनाकर किया जाता था। सर्वप्रथम कांच को गलाकर उसे गुब्बारेनुमा फुलाया जाता था तत्पश्चात् कैंची से उसे सिक्केनुमा गोल-गोल काट दिया जाता था और सिक्कानुमा कांच पर गोल्ड फ्वाइल चिपकाया जाता था। गोल्ड फ्वायल पर बांस की कमानी से बनी नुकीली कलम से महिलाएं कलाकारी करतीं थी। चूंकि गोल्ड फ्वाइल नाजुक होते हैं इसलिए बांस की कलम चलाने से डिजाइन बननेवाला हिस्सा कलम के साथ बाहर आ जाता था और वहां खाली जगह बन जाती थी। इसी प्रक्रिया के द्‌वारा टिकुली कला तैयार की जाती थी।

प्राचीन काल में कांच से तैयार टिकुली ही महिलाएं अपने माथे पर लगाती थीं। माथे पर लगने वाली टिकुली ही वक्त के थपेड़ों के साथ अपना स्वरूप बदलती गयी और महिलाओं के माथे से उतरकर घरों और आर्ट गैलरियों में टंगने लगी। टिकुली कला के विषय बिहार की पारंपरिक रीति-रिवाज, रामायण, कृष्ण से जुड़े प्रसंग,

पौराणिक कथाएँ, नृत्य, महिलाएं, प्रकृति पर आधारित होते हैं एवं प्रसिद्ध मधुबनी कला के विषयों से भी प्रेरणा ली जाती है। 20वीं शताब्दी के मध्य तक, सोने, चांदी और टूटे हुए कांच पर टिकुली का उत्पादन किया जाता था। वर्तमान समय में डिजाइन बनाने के लिए विभिन्न आकारों में हार्डबोर्ड के टुकड़े काटे जाते हैं और उनपर 'टिकुली कला' बनाई जाती है।

मुगल काल में टिकुली कला खूब फली-फूली एवं इसका बहुत अच्छा उद्योग रहा। 20वीं शती तक यह कार्य अपने चरम पर था परंतु जब ब्रिटिश सरकार भारत आई और इंडस्ट्रियल प्रोडक्ट्स भारत में ले आई तो इससे इस कला के वास्तविक रूप (जो कि सोने से तैयार किया जाता था) को बहुत बडा झटका लगा व टिकुली की मांग घटने लगी और मशीनीकृत बिंदी अपेक्षाकृत सस्ती होने के कारण प्रचलन में ज्यादा आ गई। इस कारण पटना शहर के कारीगरों द्वारा अपनी रोजी-रोटी कमाने व टिकुली कला को बचाये रखने हेतु इस कला में प्रथम बदलाव लाया गया जिसके अन्तर्गत टिकुली बनाने की प्रक्रिया तो समान ही रही परंतु जहां पहले टिकुली छोटे कांच के टुकड़ों पर बनाई जाती थी उसकी जगह अब बड़े कांच के टुकड़ों का प्रयोग किया जाने लगा, जिसके कारण तकनीक समान होने से स्वरुप में बदलाव लाने के बाद भी इस कला के नाम में बदलाव नहीं आया और इसका ''टिकुली कला'' नाम रह गया। टिकुली कला के नए स्वरूप में बहुत सारे उपयोगिता के सामान के रूप में इसका उपयोग होने लगा जिनमें डेकोरेटिव प्लेट, वॉल हैंगिंग, टेबल टॉप आदि है।

किन्तु 60 के दशक में किन्हीं कारणों से गोल्ड फ्वाइल बाजार से नदारद हो गया, जिससे टिकुली आर्टिस्ट के सामने एक नई चुनौती आ गई। इसका समाधान उन्होंने ऐनामेल पेंट से निकाला और इसी के साथ टिकुली कला में यह दूसरा बदलाव लाया गया। अब कांच पर गोल्ड फ्वायल की जगह एनामेल पेंट का प्रयोग किया जाने लगा।

उसी समय बिहार के एक नामी कलाकार उपेंद्र महारथी की नज़र टिकुली कला पर पड़ी और उन्होंने 'लाल बाबू गुप्ता व रामफल' जैसे कलकारों से संपर्क किया जो उन्हीं परिवारों के थे जो टिकुली उत्पादन में पीढ़ियों से संलग्न थे। लाल बाबू गुप्ता ने अपने पुरखों से इस कला को सीखा था। उपेंद्र महारथी, लालबाबू गुप्ता को 'उपेंद्र

महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान' ले आये (जिसकी स्थापना 1956 में हुई थी) और उनसे इस कला को आगे बढ़ाने का आग्रह किया। 1960 में अपने जापान दौरे में उपेंद्र महारथी ने देखा की जापानी कलाकार लकड़ी पर एनामेल पेंट से कलाकृतियां बना रहे थे। उन्हें विचार आया कि टिकुली का कार्य जो उस समय कांच पर एनामेल पेंट से हो रहा था वहां कांच की जगह लकड़ी का प्रयोग किया जा सकता है। इसी विचार के साथ वे पटना आए एवं पटना आकर लाल बाबू गुप्ता से इस विषय पर चर्चा की कि किस प्रकार टिकुली कला के स्वरूप में बदलाव लाया जाए। टिकुली कला में यह तीसरा बदलाव था।

लकड़ी पर टिकुली कला के निर्माण में भी बदलाव हुआ। कुछ समय पश्चात् हार्ड बोर्ड पर टिकुली कला का उत्पादन होने लगा। किंतु कुछ समय पश्चात् उसमें भी बदलाव किया गया और आज MDF बोर्ड का प्रयोग टिकुली कला के उत्पादन में किया जाता है।

टिकुली कला के उत्पादन में एनामेल पेंट व लकड़ी का होना जरूरी है। वर्तमान समय में मधुबनी कला के वास्तविक रूप में और भी बारीकियां, टिकुली कला में लाने का प्रयास चल रहा है। टिकुली की मुख्य विशेषता है कि इसमें पृष्ठभूमि को सदैव भूरे रंग से ही रंगा जाता है ताकि कलाकृतियां निखर कर आ सकें। वर्तमान समय में टिकुली कला के उत्पादन का कार्य टेबल मैट, कोस्टर, मैट, वॉल हैंगिंग, ज्वेलरी बॉक्स, कार्ड होल्डर, पेंसिल बॉक्स एवं फ्लावरवॉस आदि उपयोगिता की वस्तुओं पर किया जा रहा है। हिंदी साहित्य की कई पुस्तकों में, इसका उपयोग सुखी जीवन एवं एक विवाहित महिला की पहचान के प्रतीक के रूप में किया गया है। टिकुली आज भी बिहार के संथाल जनजाति द्वारा पहने जाने वाले आदिवासी गहनों का हिस्सा है। टिकुली कला ने माथे पर लगने वाली बिंदी से लेकर घरों एवं आर्ट गैलरी में टंगने वाली कला तक, एक लंबा सफर तय किया है। वर्तमान में एक कलानुरागी और टिकुली कलाकार अशोक कुमार बिस्वास की मेहनत की बदौलत ही आज यह कला फल-फूल रही है। इस हेतु टिकुली कला के अस्तित्व को आज के परिवेश में बचाए रखने की खातिर ग्रामीण महिलाओं को इस पहल से जोडा गया जिसमें महिलाएं जीविकोपार्जन हेतु धन भी कमा सकें एवं टिकुली कला का प्रचार भी हो सके। यदि बिहार की ग्रामीण कला की बात की जाए तो सर्वप्रथम मधुबनी का नाम प्रथम

स्थान पर लिया जाता है यही कारण है कि टिकुली कला को कभी पर्याप्त संरक्षण प्राप्त ही नहीं हुआ इसी कारण एक समय बाद यह विलुप्तता की कगार पर पहुंच गई किंतु लोक कलाकारों के प्रयास स्वरूप ही टिकुली कला आज फिर से फल-फूल रही है एवं बिहार ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत में इसे पहचान दिलाने हेतु कई कलाकार प्रयासरत है। वर्ष 2005 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा भारत में व्याप्त बेरोजगारी को खत्म करने एवं युवाओं को विभिन्न कार्यों में उनके कौशल के अनुरुप सक्षम बना कर देश में रोजगार लाने हेतु 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' भी लागू की गई है। मैं अपने शोध में टिकुली कला के बदलते स्वरूप का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करूंगी एवं टिकुली कला के माध्यम से बिहार की ग्रामीण महिलाओं के सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनने के पहलू पर अपना पक्ष प्रस्तुत करुंगी। भारत की लोक कलाएं भारत की विरासत है एवं इन्हें संरक्षित रखना हमारा कत्र्तव्य है। मेरा मुख्य उद्देश्य'टिकुली कला' का परिचय न केवल बिहार अपितु समूचे देश भर से करवाना है ताकि लोग अधिक से अधिक इस कला से अवगत हो सके एवं रोजगार प्राप्त कर स्वयं को आत्मनिर्भर बना सके। टिकुली कला की खोई हुई समृद्धि को पुनः स्थापित करने हेतु मेरे द्वारा किया गया शोध नींव का पत्थर साबित होगा।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन -

शोध को आधार प्रदान करने हेतु साहित्य का पुनरावलोकन सबसे प्रमुख अंग माना जाता है जिससे शोधकर्ता अपने शोध से सम्बन्धित तथ्यों का पुनरावलोकन कर सके। इसी के आधार पर शोधकर्ता अपने शोध से सम्बन्धित तर्को को प्रस्तुत करता है तथा साथ ही यह शोध के विषय और क्षेत्र से संदर्भित होता है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि इसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि अनुसंधानकर्ता को अपने विषय से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का कितना ज्ञान है। मैंनें अपने शोध विषय के चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया एवं संग्रहालयों में संग्रहित प्राचीन साहित्य के माध्यम से लोक कला के बारे में पढ़ा। तत्पश्चात् मैंनें इंटरनेट से **brandingbihar.com** पर बिहार की कला व संस्कृति के बारे जानकारी प्राप्त की। जिसमें मुझे ''टिकुली कला'' के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ और मैं टिकुली कला से अत्यधिक प्रभावित हुई एवं मैंनें इस कला के बारे में और

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु टिकुली कला में आज विशिष्ट रुप से सक्रिय कलाकार 'अशोक कुमार बिस्वास' से बातचीत कर इस कला के संदर्भ में और अधिक जानकारी एकत्रित की। टिकुली कला के इतने प्राचीन इतिहास के बाद भी कला जगत में लुप्तप्राय टिकुली कला के अस्तित्व की रक्षा हेतु आज भी कई कलाकार संघर्ष कर रहे है। टिकुली कला के इतिहास को बचाये रखने एवं इसके पर्याप्त प्रलेखन की आवश्यकता को समझते हुए मैंनें ''मगध क्षेत्र (बिहार) की ''टिकुली कला'' के बदलते स्वरुप का सौंदर्यात्मक विवेचन एवं कला का बाज़ारीकरण'' को अपने शोध के विषय स्वरुप चुना है। इस विषय से सम्बंधित सामग्री के लिये मैंनें ''नेशनल गैलरी आफ माडर्न आर्ट, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली एवं बिहार संग्रहालय, पटना, बिहार आदि का भ्रमण किया एवं पुस्तकालयों मे पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

मैंने लेखक ''डा0 चारु गुप्ता'' की पुस्तक **Indian Folk and Tribal Painting** अध्ययन किया। जिससे मुझे लोक कला के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

लेखक ''विजय शकर उपाध्याय'' की पुस्तक ''भारत की जनजातीय संस्कृति'' के अध्ययन से भारत की विभिन्न जनजाती एवं संस्कृति के संदर्भ में जानकरी प्राप्त हुई।

लेखक ''मीरा पकरसी'' की पुस्तक "**Folk Tales of Bihar** के अध्ययन से बिहार की लोक कला के संदर्भ में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई।

इन सभी उपलब्ध स्त्रोतो से प्राप्त जानकारी के आधार पर मुझे लोक कला से सम्बंधित विविधता एवं शैलीगत कलात्मक विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मैंनें विभिन्न इण्टरनेट-वेबसाइट का भी अवलोकन किया जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय में सरल वर्गीकरण के साथ ही इसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी।

परिकल्पना -

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की सफलता व उसकी वस्तुनिष्ठा हेतु परिकल्पना की अत्यंत आवश्यकता होती है। जिससे हम अपने शोध के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें व शोध विषय पर केन्द्रित रह सकें। एक

शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि उसके शोध की परिकल्पना एकदम स्पष्ट व अर्थपूर्ण हो। परिकल्पना शोध कार्य की दिशा निर्देशित करती है। जिससे शोधार्थी अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सके। इस परिकल्पना को तैयार करने से पूर्व शोध समस्या का ढ़ाचा तैयार करना आवश्यक है। इस हेतु मैं बिहार के पटना नगर में 800 वर्ष पूर्व विकसित हुई ''टिकुली कला'' की सौंदर्यात्मक विवेचना प्रस्तुत करने का प्रयास करुंगी। बिहार की पृष्ठभूमि, बिहार की प्रमुख लोक कला व शिल्प का अध्ययन प्रस्तुत करुंगी।

1. टिकुली के माथे की बिंदी से लेकर विश्वप्रसिद्ध लोक कला बनने तक के सफर पर प्रकाश डालूंगी।

2. अत्यधिक प्रसिद्ध होने के बावजूद टिकुली कला के पतन के कारणों व पुनरुत्थान की कथा एवं कलाकारों द्वारा टिकुली कला को वर्तमान समय तक जिन्दा बनाये रखने के उनके प्रयत्नों पर प्रकाश डालूंगी।

3. अंत में टिकुली कला की वर्तमान स्थिति व कला के बाज़ारीकरण पर विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करुंगी एवं पर्याप्त ज्ञान व जागरुकता के अभाव के कारण विलुप्तता की कगार पर खडी इस लोक कला से सभी को परिचित करवाना व टिकुली कला हेतु लोगों में जागृति पैदा करना मेरा मुख्य लक्ष्य होगा ताकि भविष्य में मेरे द्वारा किया गया शोध कार्य इस कला के अस्तित्व को जीवित बनाये रखने में सहायक सिद्ध हो सके, जिससे मेरे द्वारा किए गए शोध की मौलिकता सिद्ध हो सके।

उद्देश्य-

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कार्य कर रहा है। मेरे इस लघु शोध को पूर्ण करने हेतु निम्न उद्देश्यो का पालन किया जायेगा-

1. टिकुली कला का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करुंगी एवं टिकुली कला का अत्यधिक प्रचीन व समृद्ध इतिहास होने के बाद भी इसके पतन के कारणों की विस्तृत विवेचना करुंगी।

2. बिहार की लोक कला के रुप में केवल मधुबनी को सर्वाधिक लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त हुई हैं इसका कारण केवल यही है कि मधुबनी कला पर समय-समय पर पर्याप्त कार्य किया गया है एवं इसे पूर्ण रुप से

संरक्षण प्राप्त हुआ है। वहीं टिकुली कला को प्रसिद्धि व पर्याप्त संरक्षण ना मिल पाने के कारण इस कला पर पूर्ण क्रमबद्ध लिखित विवेचन मिलना संभव नहीं हुआ है, मेरा मुख्य उद्देश्य टिकुली कला पर प्राप्त संम्पूर्ण जानकारी को एकत्रित कर इसे व्यवस्थित व क्रमबद्ध करना हैं। टिकुली कला की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करना एवं इस कला की खोयी समृद्धि व महत्व से सभी को अवगत करवाना, मेरा प्रयास रहेगा।

3. टिकुली कला के बाज़ारीकरण पर प्रकाश डाला जायेगा एवं इस कला के द्वारा बिहार की महिलाओं के स्वयं को सुदृढ़ व आत्मनिर्भर बनाने के पक्ष को प्रस्तुत करुंगी। टिकुली कला के माध्यम से स्वयं व देश के विकास हेतु किस प्रकार टिकुली कला को उपयोगी कला के रुप में प्रयोग मे लाया गया, प्रस्तुत पक्ष पर अपने विचारों की विवेचना करुंगी।

चर -

मेरे शोध प्रबन्ध के चरों के आधार पर सूत्र निम्नलिखित हैं-

1. स्थानीय भ्रमण।
2. विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय।
3. विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालयों के अध्यक्षों से वार्तालाप।
4. विषय-विशषज्ञों से विषय पर वार्तालाप।
5. स्थानीय कलाकारों से साक्षात्कार।
6. कला प्रशसक एवं कला समीक्षक।
7. पुस्तकें।
8. समाचार पत्र-पत्रिकाएं।
9. विवरणिका (कैटलाग)।
10. इन्टरनेट वेबसाइट्स।

कार्य प्रणाली-

अनुसंधान अभिकल्प-

प्रदत्त संकलन - प्रदत्तों के एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेंगे।

1. **प्राथमिक स्त्रोत-** बिहार के कला केंद्रों- पटना संग्रहालय, ललितकला अकादमी, पटना, उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान, पटना का भ्रमण एवं स्थानीय टिकुली कलाकारों से साक्षात्कार।

2. **द्वितीयक स्त्रोत-** पुस्तकें, प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएं, समाचार-पत्र, कैटलॉग, वेबसाइट, संग्रहालय, पुस्तकालयों के भ्रमण आदि।

- मेरी शोध निर्देशिका से विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार -

मेरे द्वारा टिकुली कला के लगभग 200-250 प्रतिदर्शों का चयन किया जायेगा।

प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि -

मेरी प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया कलाकृतियों, चर्चाओं व विवेचनाओं पर आधारित होगी।

साक्षात्कार -

विषय-विशेषज्ञों, स्थानीय लोगों, कला समीक्षकों और टिकुली कला के कलाकारों से साक्षात्कार किया जाएगा ।

सीमायें -

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वह अपने शोध के कार्य को अपनी समय-सीमा को देखते हुए पूर्ण करने का प्रयास करे। इसी क्रम में मैंने अपने शोध हेतु बिहार की लोक कला-“टिकुली कला” का चयन किया तथा उसे अपने शोध का विषय बनाया। शोध से सम्बन्धित तथ्यों के आधार पर शोध को अपनी समय-सीमा पर पूर्ण करने का प्रयास करूँगी।

विषय-अनुक्रमणिका

भूमिका - लोक कला की पृष्ठभूमि।

प्रथम अध्याय - बिहार की प्रमुख लोक कलाओं का अध्ययन।

द्वितीय अध्याय - मगध क्षेत्र (बिहार) की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

तृतीय अध्याय - मगध क्षेत्र (बिहार) की ''टिकुली कला'' के बदलते स्वरुप का सौंदर्यात्मक विवेचन।

3.1 बिंदी का इतिहास।

3.2 टिकुली कला का इतिहास।

3.3 टिकुली निर्माण प्रक्रिया, टिकुली कला की विशेषताएं एवं महत्व।

3.4 टिकुली कला एवं इसकी उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक।

3.5 टिकुली कला का पतन एवं पुनरुत्थान।

चतुर्थ अध्याय - मगध क्षेत्र (बिहार) की टिकुली कला का मगध की अन्य समानान्तर लोक कलाओं से तुलनात्मक अध्ययन।

पंचम अध्याय - वर्तमान समय में टिकुली कला से प्रभावित सक्रिय कलाकार।

5.1 टिकुली कला के प्रसिद्ध कलाकार

5.1.1 उपेन्द्र महारथी।

5.1.2 लालबाबू गुप्ता।

5.1.3 अशोक कुमार बिस्वास

5.2 अन्य प्रभावित कलाकार।

षष्टम अध्याय - मगध क्षेत्र (बिहार) की टिकुली कला का बाज़ारीकरण।

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- शोध पत्र पत्रिकायें-
- समाचार पत्र
- इंटरनेट वेबसाइट्स
- चित्र सूची

परिशिष्ट -

- कलाकारों से साक्षात्कार।
- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार।
- तकनीकी शब्दों का अर्थ।
- समाचार पत्र।

अनुसंधान अभिकल्प -

भूमिका- भूमिका के अंतर्गत मैं भारतीय लोक कला की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालंगी।

प्रथम अध्याय- प्रथम अध्याय के अंतर्गत बिहार की प्रमुख लोक कलाओं का अध्ययन प्रस्तुत करुंगी।

द्वितीय अध्याय- द्वितीय अध्याय के अंतर्गत मैं मगध क्षेत्र (बिहार) की भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रस्तुत करुंगी।

तृतीय अध्याय- तृतीय अध्याय के अंतर्गत मैं मगध क्षेत्र (बिहार) की टिकुली कला का सौंदर्यात्मक विवेचन प्रस्तुत करुंगी जिसके अन्तर्गत- बिंदी का इतिहास, टिकुली कला का इतिहास, टिकुली निर्माण प्रक्रिया, टिकुली कला की विशेषताएं एवं महत्व, टिकुली कला एवं इसकी उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारक, टिकुली कला का पतन एवं पुनरुत्थान निम्न बिन्दुओं पर विस्तृत विवेचना करुंगी।

चतुर्थ अध्याय - चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत मगध क्षेत्र (बिहार) की टिकुली कला का मगध की अन्य समानान्तर लोक कलाओं से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करुंगी।

पंचम अध्याय - पंचम अध्याय के अंतर्गत मैं वर्तमान समय में टिकुली कला से प्रभावित सक्रिय कलाकार एवं टिकुली कला के प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में जानकारी प्रस्तुत करुंगी जिनमें उपेन्द्र महारथी, लालबाबू गुप्ता, अशोक कुमार बिस्वास एवं अन्य कलाकार प्रमुख हैं।

षष्टम अध्याय- षष्टम अध्याय के अंतर्गत मैं मगध क्षेत्र (बिहार) की टिकुली कला के बाज़ारीकरण पर अध्ययन प्रस्तुत करुंगी।

निष्कर्ष

दिनांक-

शोध छात्रा

गीतांजली गालव

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

- अग्रवाल, वासुदेव शरण, (1966), भारतीय कलापृथिवी प्रकाशन, वाराणसी।
- बडेरिया, तारक नाथ, (2016), बिहार की लोक कलाएं एवं शिल्प, नेशनल पब्लिशिग हाऊस,नई दिल्ली।
- गुप्ता, नीलिमा, भारतीय लोक कलास्वातीपब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- चट्टोपाध्याय, कमला देवी, भारतीय हस्तशिल्प परम्परा, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारतसरकार पटियाला हाऊस, नई दिल्ली।
- माथुर, कमल, (1997), हस्त शिल्प कला के विविध आयाम, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
- वर्मा, महेन्द्र, (2006), भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली।
- उपाध्याय, कृष्ण देव, (1991), भोजपुरी लोक संस्कृति, इलाहबादहिन्दी साहित्य सम्मेलनप्रयाग।
- सिंह,शंकर दयाल,बिहार,एक सांस्कृतिक वैभव।

BIBLIOGRAPHY –

- Jain, J. Ganga Devi, (1997), Tradition and Expression in MithilaPainting , Ahmedabad, India: Mapin Publishing Pvt Ltd., in association with TheMithila Museum, Niigata, Japan.

- UpendraMaharathiShilpAnusandhanSansthan, Handicrafts of Bihar, Indian Handicrafts Development Commissioner (Handicrafts), Govt. of Bihar.
- Chaturvedi, Ritu, Bihar Through the Ages
- Abraham, T. M. (1964), Handicrafts in India, New Delhi.
- Busabil, Mareao , (1971), 5000 years of the Art of India, New York.
- Mookerjee, Ajit, (1986), Folk Art of India, Clarion Books.
- Thakur, Upendra, Madhubani Painting, Abhinav Publications, E-37, HausKhas, New Delhi.
- Verma, Nalin , (2019), The Greatest Folk Tales of Bihar, Rupa publications India.
- Dhamija, Jasleen , (1994), Indian Folk Art and Craft, National Book Trust.
- Adolf Mode, Heinz, Chandra, Subodh, (1985), Indian Folk Art, Taraporevala.
- Aryan, Subhashini, (2005), Unknown Masterpieces of Indian Folk & Tribal Art, K.C. Aryan's Home of Folk Art.
- Smita Gupta, Charu , (2008), Indian Folk and Tribal Paintings, Lustre Press.
- Eliwin, Virrir, (1995), Religion of an Indian, Tribal Bombay Oxford University Press.
- Singh, Ajitk,Tribal Festivals of Bihar : A Functional Analysis

INTERNET WEBSITES –

http://brandingbihar.com/article9.html

https://shop.patnabeats.com/product-category/tikuli-art/

https://thatpatnablogger.wordpress.com/2018/01/06/tikuli-art-an-800-year-old-art-form-from-bihar/

https://arabhishek.com/tikuli-art-the-revival-of-a-lost-craft-of-bihar/

https://medium.com/@VinitaMathur/the-vanishing-tikuli-art-of-bihar-9d7be614aaea

https://www.outlookhindi.com/art-and-culture/general/know-about-bihars-rich-tikuli-art-28934

https://www.thebetterindia.com/93754/tikuli-art-revival-bihar-women-artisans-empowerment/

https://www.patnabeats.com/all-you-need-to-know-about-tikuli-a-vanishing-craft-from-bihar/

https://www.makeheritagefun.com/tikuli-women-empowerment/

https://www.facebook.com/TikuliArt//

परिशिष्ट

Figure No.-1.Ancient Tikuli/ Bindi, Time : 1920

Figure No.-2, Title : Durga, Art : Tikuli Art, Artist : Lalbabu gupta, Medium : Gold foil on glass, Time : 1950

Figure No.-3, Title : Durga Ji, Art : Tikuli Art, Artist : Lalbabu gupta, Medium : Enamel painton Wood Board, Size : 1"x1.5", Time : 1956

Figure No.-4, Title : Krishna leela, Art : Tikuli Art, Artist : Ashok kumarBiswas, Medium : Enamel paint on MDF Board, Size : 144"x48"

Figure No.-5, Art :Tikuli Art, Artist : group of local artists from Bihar trained by the pioneer Ashok Kumar Biswas, Type : Utility Items, Time : 2015-2020